REET 2025
LEVEL-1 & 2
वंदन बैच
हिंदी
भाषा दक्षता का विकास
LIVE
02-01-2025 11:00 AM

- भाषा, भाव, विचार और अनुभवों को अभिव्यक्त करने का सर्वोत्तम साधन है। भावों का प्रकाशन व्यक्ति कई प्रकार से करता है, जैसे- अंग संचालन द्वारा, वस्तु अथवा चित्र दिखाकर, विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से और भाषा व्यवहार द्वारा। भाषा व्यवहार के माध्यम से व्यक्ति अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति दो रूपों में करता है- बोलकर और लिखकर। मौखिक तथा लिखित रूप में विचारों को प्रकट करने के लिए भाषा का सहारा लिया जाता है। भाषा वह शक्ति है जिसके माध्यम से मानव स्वयं को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करता है और दूसरों के विचारों को समझता है। अत: भाषा के तत्त्वों, वैचारिक विषयवस्तु, रचना के विविध रूपों तथा साहित्य की विविध विधाओं की जानकारी आवश्यक है। इस प्रकार भाषा दक्षता प्राप्त करने के निम्न उद्देश्य कहे जा सकते हैं-

- भाषा के तत्त्वों- वर्णों और शब्दों का शुद्ध उच्चारण, उनके भेद, मुहावरों का प्रयोग, साधारण वाक्य रचना, व्याकरण सम्मत भाषा आदि का ज्ञान प्राप्त करना।
- पढ़ाए गए पाठों की वैचारिक विषयवस्तु का ज्ञान प्राप्त करना।
- रचना के विविध रूपों- लिखित व मौखिक का ज्ञान प्राप्त करना।
- बोध सहित सुनने व पढ़ने की योग्यता प्राप्त करना।
- प्रभावी ढंग से बोलकर व लिखकर अपनी बात कहने की योग्यता प्राप्त करना
- भाषा कौशलों में मौलिकता लाने की योग्यता प्राप्त करना।

- भाषा व साहित्य के प्रति रुचि जागृत करना।

भाषा दक्षता का विकास सभी विद्यार्थियों में अनिवार्य है। भाषा की प्रमुख दक्षताएँ निम्न हैं-

- (1) सुनना
- (2) बोलना
- (3) पढ़ना
- (4) लिखना
- (5) विचारों का बोधन
- (6) व्यावहारिक व्याकरण
- (7) स्व-अधिगम
- (8) भाषा प्रयोग और शब्द भंडार पर अधिकार।

- भाषा से संबंधित उपर्युक्त वर्णित कौशलों या दक्षताओं का पूर्ण विकास कक्षा 5 के अंत तक लगभग सभी विद्यार्थियों में हो जाना चाहिए। ये दक्षताएँ कक्षा पाँच तक क्रमबद्धता से चलती रहनी चाहिए। यदि किसी दक्षता का एक कक्षा में पूरी तरह विकास न हो तो अगली कक्षा में उससे संबंधित दक्षता को सीखने में कठिनाई होती है। अतः पहले इन दक्षताओं का विकास कर लें तभी आगे की दक्षता सिखाएँ क्योंकि आगे वाली दक्षता सीखी हुई दक्षता पर आधारित होती है। इन भाषा दक्षताओं की दूसरी विशेषता यह है कि ये सभी एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

- छात्रों में इन दक्षताओं को रुचिकर ढंग से विकसित करने के लिए विद्यालय में समय-समय पर विभिन्न प्रकार के मनोरंजक अध्यापन-अधिगम कार्यकलापों का आयोजन किया जाना चाहिए जैसे कहानियाँ सुनना, अभिनय, पहेली प्रतियोगिता, चुटकुले, गीत, शब्दों के खेल, वाद-विवाद प्रतियोगिता, सामूहिक विचार-विमर्श, घटनाओं का वर्णन आदि। रोचक बाल पुस्तकों के पठन, चित्रमय कोश के अध्ययन तथा सभी सहपाठियों के बीच सामूहिक कार्यकलापों को बढ़ावा देकर, विद्यार्थियों में स्वतः अधिगम के कौशल एवं भाषा के व्यावहारिक प्रयोग को विकसित किया जा सकता है। भाषा दक्षता का विकास निम्न प्रकार किया जा सकता है-

सीखना

शुद्ध उच्चारण: भाषा की मूल प्रकृति मौखिक है और बोलने की शुद्धता बहुत कुछ मानक उच्चारण पर निर्भर है। अतः भाषाई दक्षता प्राप्त करने-कराने के लिए यह नितांत आवश्यक है कि हम शुद्ध उच्चारण के महत्व को जानें और शुद्ध उच्चारण संबंधी अभ्यासों की प्रकृति और स्वरूप से परिचित हों, तभी हमें कक्षा शिक्षण में यथेष्ट सफलता प्राप्त हो सकेगी। उच्चारण में भाषिक इकाइयों के शुद्ध बोलने की प्रक्रिया पर विशेष बल दिया जाता है। अतः शुद्ध उच्चारण हेतु आवश्यक है कि-

- उच्चारण शिक्षण के लिए शब्द स्तर से लेकर वाक्य स्तर तक विद्यार्थियों की सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल उन्हें अनेक प्रकार के अभ्यास कराए जाने चाहिए। पहले ध्वनि अभ्यास कराए जाएँ। ये अभ्यास शब्दों, शब्द युग्मों, वाक्यांशों और वाक्यों द्वारा कराए जाएँ। अनुस्वार व अनुनासिक आदि शिक्षण बिंदुओं पर अभ्यास कराया जाना चाहिए।
- अनेक प्रकार के उदाहरणों से युक्त विविध अभ्यास तब तक कराए जाएँ जब तक कि विद्यार्थियों में शुद्ध आचरण की स्थायी आदत का निर्माण न हो जाए और वे विभिन्न संदर्भों में अशुद्धियों का पूरा सुधार न कर लें।

क - क् + अ

ख - ख् + अ

ग - ग् + अ

उ - कुल - सब

ऊ - कूल - किनारा

अनुनासिक - म, न अँ → अनुस्वार

अः - विसर्ग

कमल → शुद्ध उच्चारण → जब हमें ध्वनियों का पूर्ण ज्ञान होगा।

सम + सार = संसार (अनुस्वार)

ँ - चन्द्रबिन्दु

- अभ्यासों के निर्माण एवं कक्षा शिक्षण में 'सरलता से कठिनता' का क्रम अपनाया जाए।
- विभिन्न अभ्यासों का कक्षा शिक्षण में प्रयोग करते समय उच्चारण का ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया जाए जिसमें ध्वनि व्यवस्था, बल, विवृत्ति, सुर और अनुतान का सही प्रयोग हो।
- उच्चारण की प्रक्रिया शब्द स्तर के अभ्यासों से आरंभ होकर वाक्य और वार्तालाप के अनुच्छेद स्तर तक चलती रहनी चाहिए। इससे विद्यार्थी भाषा व्यवहार में दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।